सोलहवां अंक

भावना

2024 - 25

महा निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नै,

शाखा कोच्ची

कार्यालय गतिविधियां

ओणम 2024

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भावना

2024-25

महा निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नै,
शाखा कोच्ची की वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

भावना

महा निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नै, शाखा कोच्ची

प्रकाशन	वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका
प्रकाशक	महा निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नै, शाखा कार्यालय, कोच्ची
अंक	सोलहवां
मुखपृष्ठ	लेखापरीक्षा दिवस के उपलक्ष में आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित चित्र – मास्टर रयन मैथ्यू, सुपुत्र अमूल्या ऐनी तोमस
मूल्य	राजभाषा के प्रति निष्ठा
मुद्रणालय	रेयनबो प्रन्टर्स

पत्रिका परिवार

मख्युसंरक्षक

श्री के पी आनंद

महा निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चेन्नै

संरक्षक

श्री के शशिधर

उप निदेशक(सी एस/जी एस टी)II

परामर्शदाता

श्रीमती उषा श्रीकुमार

उप निदेशक (डीटी) II

संपादक मंडल

श्रीमती श्रीदेवी के वी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती सिन्धु नायर

सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्री धर्मेंद्र सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

संदेश

श्री के पी आनंद
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), चेन्नै

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजभाषा पत्रिका भावना के 16 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के विकास में कार्यालयीन पत्रिकाओं का योगदान प्रमुख है। राजभाषा पत्रिकाएं कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को एक मंच प्रदान करने का साथ राजभाषा के प्रचार में भी अपनी सार्थक भूमिका का निर्वहन करती हैं।

मुझे पूरा विशवास है कि विविध रचनाओं से सुसज्जित यह पत्रिका कार्यालय में राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में अपना योगदान देगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु पत्रिका के सभी रचनाकारों, संपादक मंडल एवं प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

संदेश

के शशिधर
उप निदेशक(सीएस/जीएसटी) II

गृह पत्रिका भावना के 16 वें अंक के माध्यम से आप सभी रचनाकारों से आपके रोचक एवं सुंदर रचनाओं को पढ़ते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। पत्रिका हम सभी के लिए अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य करने के लिए प्रेरणा का एक स्त्रोत है।

हिंदी केवल राजभाषा ही नहीं अपितु जन-जन की भाषा बन कर राष्ट्र भाषा की गंगा से होकर विश्व भाषा का महासागर निरंतर बन रही है। पत्रिका में भागीदारी के माध्यम से सभी कार्मिकों में लेखन के प्रति चिर काल तक रुचि पैदा होती रहेगी।

हिंदी सभी भाषा-भाषियों को जोड़ने के लिए एक संपर्क भाषा है। इस प्रकार जनसंपर्क की भाषा के तौर पर इस विशाल देश को एक सूत्र में बांधने में हिंदी की एक महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

पत्रिका द्वारा हम सभी अपने लेखों के माध्यम से अपने अंदर छुपे हुए रचनाकार से सभी को अवगत कराते है।

अंत में मैं इन सभी रचनाकारों को बधाई का पात्र मानता हूँ जिन्होनें अपना कीमती समय निकालकर पत्रिका के निर्माण में योगदान दिया।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

संदेश

उषा श्रीकुमार
उप निदेशक (डीटी) II

बहुत खुशी है कि कार्यालय से हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है और यह भी अत्यंत हर्षदायक है कि इसके 15 अंक पहले से प्रकाशित किए जा चुके हैं । हिन्दी पत्रिका प्रकाशित करने में चुनौतियां काफी है परंतु अब भी हर वर्ष इसे निर्बाध प्रकाशित करने में कार्यालय सफल हो रहा है, यह भी सराहनीय है ।

इस पत्रिका का उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रचार और प्रसार को बढ़ावा देना है । अवश्य ही यह पत्रिका हिंदी के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य करेगी और केंद्र सरकार के राजभाषा नीति के कायार्न्वयन में अपना योगदान देगी ।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी अधिकारियों, लेखकों, और संपादकों को हार्दिक बधाई। उनके प्रयासों ने इस पत्रिका को उत्कृष्ट बनाया है। उनके लेख और योगदान न केवल ज्ञानवर्धक हैं, बल्कि हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता और प्रेम को भी बढ़ावा देते हैं।

संपादकीय

हिंदी न केवल हमारे सांस्कृतिक और ऐतिहासिक गौरव का प्रतीक है, बल्कि यह पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने का माध्यम भी है। हिंदी को वैश्विक मंच पर स्थापित करना और देश के प्रत्येक कोने तक इसकी महत्ता को पहुँचाना हमारा दायित्व है।

केंद्र सरकार की पहल पर प्रकाशित यह पत्रिका के कर्मचारियों के बीच हिन्दी में अपनी सर्गात्मकता की परख करने में भी सहायक होगी ।

हिंदी मात्र एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। यह करोड़ों लोगों के संवाद का माध्यम है और पूरे देश को भावनात्मक रूप से जोड़ती है। हिंदी न केवल साहित्यिक भाषा है, बल्कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रशासन में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। डिजिटल युग में भी हिंदी का महत्व तेजी से बढ़ रहा है।

हमें विश्वास है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार और प्रसार में मील का पत्थर साबित होगी। यह पहल हिंदी भाषा को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगी और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनेगी।

अनुक्रमणिका

1	iGOT कर्मयोगी भारत: शासन के लिए क्षमता निर्माण की नई दिशा	लीना सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
2	बलात्कार संस्कृति और लैंगिक हिंसा के खिलाफ आवाज : नई पीढ़ी के नैतिक परिवर्तन का आह्वान	रवि सैनी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
3	इडुक्की की सड़कों पर बाइक यात्रा : एक अविस्मरणीय अनुभव	संतोष कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
4	नौकरी के बाद घर पर पहली दिवाली	राकेश कुमार,सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
5	मोबाईल फोन से तीव्र आसक्ति	वीणा षाजी, अतिथि लेखक
6	जंगल में कुछ देर	वीणा सुरेश,लेखापरीक्षक
7	शिल्पराममम	अनिता अरविंद,वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
8	भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक (CAG): नैतिकता और जिम्मेदारियाँ	सिमिषा सी एम, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
9	एम एस अखिल के साथ वार्तालाप	मीरा लाल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
10	एक नीड बनाया था	सिन्धु नायर, हिन्दी अधिकारी
11	हिंदी का महत्व	धर्मेंद्र सिंह, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
12	जम्मू और कश्मीर की सुंदरता की खोज	अमृता कृष्णन यू एस, लेखापरीक्षक
13	मेरे मस्से पर तीन बाल	सिजी सी वर्गीस, सहायक पर्यवेक्षक
14	शांति की धारा	ताराकांत पांडा, लेखापरीक्षक
15	एक नया अध्याय : पिता बनने की मेरी यात्रा	बेनिडिक्ट सेनो, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
16	उपहार	शोभा बी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

iGOT कर्मयोगी भारत: शासन के लिए क्षमता निर्माण की नई दिशा

भारत जैसे विविधता से भरे देश में प्रशासन की जटिलताओं को संभालने और सुशासन सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा iGOT कर्मयोगी भारत पहल की शुरुआत की गई है। यह कार्यक्रम मिशन कर्मयोगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य सरकारी कर्मचारियों की क्षमताओं को उन्नत करना, पेशेवर दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना, और नागरिक-केंद्रित शासन को मजबूत बनाना है।

iGOT कर्मयोगी भारत क्या है?

iGOT (इंटीग्रेटेड गवर्नमेंट ऑनलाइन ट्रेनिंग) कर्मयोगी भारत एक डिजिटल शिक्षण मंच है, जो सरकारी अधिकारियों को उनकी क्षमता और भूमिका के अनुसार प्रशिक्षण प्रदान करता है। इस मंच के माध्यम से अधिकारी अपने ज्ञान और कौशल को उन्नत कर सकते हैं और बदलते प्रशासनिक परिवेश में अपनी भूमिका को बेहतर तरीके से निभा सकते हैं।

यह केवल एक प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह एक समग्र क्षमता निर्माण तंत्र है, जो शासन प्रणाली को "नियम-आधारित" से "भूमिका-आधारित" बनाने की दिशा में काम करता है।

iGOT कर्मयोगी भारत के उद्देश्य

- निरंतर सीखने का अवसर: सरकारी कर्मचारियों को विश्व स्तरीय प्रशिक्षण सामग्री और पाठ्यक्रम प्रदान करना।
- भूमिका-आधारित शासन: हर अधिकारी की भूमिका के अनुसार उसकी क्षमताओं का विकास करना।
- नागरिक-केंद्रित प्रशासन: निर्णय लेने में नैतिकता, जवाबदेही, और सेवा-भावना को प्रोत्साहित करना।
- डिजिटल शिक्षा का प्रसार: आधुनिक तकनीकों जैसे AI और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग कर प्रभावी और व्यक्तिगत प्रशिक्षण प्रदान करना।
- वैश्विक मानकों के अनुरूपता: भारतीय अधिकारियों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप प्रशिक्षित करना।

Integrated Government Online Training

iGOT कर्मयोगी के मख्यु उपयोग

1. **क्षमता निर्माण**

   iGOT कर्मयोगी सरकारी अधिकारियों की पेशेवर क्षमताओं को विकसित करता है। यह प्लेटफॉर्म उन्हें विभिन्न पाठ्यक्रमों के माध्यम से नई तकनीकों, नीतियों और प्रक्रियाओं को सीखने का अवसर प्रदान करता है।

2. **भूमिका आधारित प्रशिक्षण**

   iGOT कर्मयोगी प्रत्येक सरकारी अधिकारी की भूमिका और जिम्मेदारियों के अनुसार प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह "नियम-आधारित शासन" से "भूमिका-आधारित शासन" की ओर बदलाव को प्रोत्साहित करता है।

3. **नागरिक-केंद्रित प्रशासन**

   इस प्लेटफॉर्म के पाठ्यक्रम नागरिकों की आवश्यकताओं और समस्याओं को समझने पर आधारित हैं। इसका उद्देश्य नागरिकों के लिए त्वरित और प्रभावी सेवाएँ प्रदान करना है।

4. **डिजिटल और तकनीकी कौशल का विकास**
   iGOT कर्मयोगी अधिकारियों को आधुनिक डिजिटल उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करना सिखाता है। इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा एनालिटिक्स, और साइबर सुरक्षा जैसे पाठ्यक्रम शामिल हैं।
5. **समय और संसाधन की बचत**
   यह प्लेटफॉर्म ऑनलाइन प्रशिक्षण प्रदान करता है, जिससे अधिकारियों को भौतिक रूप से कहीं जाने की आवश्यकता नहीं होती। वे अपनी सुविधा के अनुसार किसी भी समय, कहीं से भी पाठ्यक्रम पूरे कर सकते हैं।
6. **पारदर्शिता और निगरानी**
   iGOT कर्मयोगी में एक प्रगति मॉनिटरिंग प्रणाली है, जो अधिकारियों के सीखने की प्रगति और प्रदर्शन पर नजर रखती है। इससे सरकार को प्रशिक्षण की प्रभावशीलता को मापने में मदद मिलती है।
7. **नैतिकता और नेतृत्व का विकास**
   यह प्लेटफॉर्म अधिकारियों को नैतिकता, नेतृत्व, और बेहतर निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने में मदद करता है।

iGOT कर्मयोगी के लाभ

1. शासन में सुधार: iGOT कर्मयोगी प्रशासनिक प्रक्रियाओं को तेज़ और प्रभावी बनाता है।
2. व्यक्तिगत विकास: अधिकारियों के ज्ञान और कौशल में सुधार होता है, जिससे उनका करियर विकास भी संभव होता है।
3. सामाजिक लाभ: नागरिकों को अधिक पारदर्शी और कुशल सेवाएँ मिलती हैं।
4. वैश्विक मानकों का पालन: यह प्लेटफॉर्म भारत के प्रशासनिक तंत्र को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाता है।
5. सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति: iGOT कर्मयोगी अधिकारियों को सतत विकास लक्ष्यों को समझने और उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित करता है।

iGOT कर्मयोगी भारत की विशेषताएं

1. डायनेमिक लर्निंग प्लेटफॉर्म: इस मंच पर नेतृत्व, नैतिकता, तकनीकी कौशल, और सार्वजनिक प्रशासन जैसे विषयों पर अनेक पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।
2. विस्तारशीलता: यह प्लेटफॉर्म करोड़ों सरकारी कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करने में सक्षम है।
3. AI-आधारित वैयक्तिकरण: कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से अधिकारियों की भूमिकाओं और करियर लक्ष्यों के अनुसार प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की सिफारिश की जाती है।
4. सहज उपयोग: यह मंच ऑनलाइन है, जिससे कर्मचारी किसी भी समय, कहीं से भी सीख सकते हैं।
5. पारदर्शिता और निगरानी: कर्मयोगी डैशबोर्ड के माध्यम से प्रगति की निगरानी की जाती है।

Integrated Government Online Training

iGOT कर्मयोगी भारत, एक दूरदर्शी पहल है, जो भारत की प्रशासनिक व्यवस्था को बदलने और उसे अधिक उत्तरदायी और कुशल बनाने की दिशा में काम कर रही है। यह केवल सरकारी अधिकारियों के कौशल को उन्नत करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह भारत को सुशासन के एक नए युग में प्रवेश कराने का प्रयास है।

इसलिए, iGOT कर्मयोगी भारत केवल एक पहल नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा कदम है, जो "नए भारत" की परिकल्पना को साकार करने में सहायक सिद्ध होगा।

लीना सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

iGOT
Integrated Government Online Training

बलात्कार संस्कृति और लैंगिक हिंसा के खिलाफ आवाज: नई पीढ़ी के नैतिक परिवर्तन का आह्वान

हाल ही में, देश ने दीपावली मनाई, जिसे दीपावली-प्रकाश का त्योहार के नाम से भी जाना जाता है। इस दौरान पूजा की जाने वाली मुख्य देवी लक्ष्मी हैं, जो धन की देवी हैं। देश के हर घर में उत्सव शुरू होने से पहले अपने घरों को सजाने की परंपरा है। इस सारी रोशनी के पीछे विश्वास है कि देवी लक्ष्मी को प्रसन्न करना चाहिए, क्योंकि माना जाता है कि एक दुखी देवी अपना आशीर्वाद नहीं देतीं। दिवाली से एक महीने पहले नवरात्रि का आयोजन होता है, जो नौ दिनों का पर्व है, जिसमें देवी लक्ष्मी के नौ रूपों की पूजा की जाती है।

हालांकि महिलाओं को दैवीय शक्ति और धन का प्रतीक मानते हुए श्रद्धा दी जाती है, भारत की कड़ी वास्तविकता यह है कि यह देश महिलाओं के लिए दिन-ब-दिन असुरक्षित होता जा रहा है। कोलकाता के एक सार्वजनिक अस्पताल में एक रेजिडेंट डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या का हालिया मामला अभी भी मेरे मन में ताजा है। अगर एक डॉक्टर अपने कार्यस्थल पर सुरक्षित नहीं है, तो हम देश के दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सुरक्षा कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं? सोशल मीडिया पर आक्रोश, मोमबत्ती मार्च और विरोध प्रदर्शन हुए, लेकिन उनका असर जल्दी फीका पड़ गया। विडंबना यह है कि कोलकाता की त्रासदी के बावजूद ऐसी घटनाएं रुक नहीं रही हैं। इसके बाद के दिनों में, मैंने अखबारों में "महिला के साथ बस में बलात्कार" और "तीन पुरुषों द्वारा नाबालिग के साथ बलात्कार" जैसी खबरें पढ़ीं। इन घटनाओं की आवृत्ति यह दर्शाती है कि बलात्कार अब भारतीय समाज में एक सामान्य समस्या बनता जा रहा है, और यह अपेक्षाकृत बड़ा मुद्दा बन चुका है।

यह मेरे जैसे सामान्य नागरिक के लिए अत्यंत चिंता का विषय है, जो भारत के प्राचीन सांस्कृतिक, सामाजिक और सभ्यतागत मल्यूों पर गर्व करता है। इसलिए मैंने इस मंच का उपयोग अपने विचार साझा करने के लिए किया है।

लैंगिक हिंसा और बलात्कार संस्कृति क्या है?

लैंगिक हिंसा उस हिंसा को कहते हैं जो किसी व्यक्ति के लिंग या लिंग पहचान के आधार पर होती है। जब यह हिंसा महिलाओं को उनके लिंग के आधार पर होती है, तो इसे महिलाओं के खिलाफ हिंसा कहा जाता है। यह हिंसा कई रूपों में हो सकती है, जैसे शारीरिक, मानसिक, यौन और आर्थिक शोषण, उत्पीड़न और शोषण। यदि हिंसा यौन शोषण के रूप में होती है, तो इसे बलात्कार या इसी तरह के अपराध के रूप में देखा जा सकता है। बलात्कार संस्कृति तब उत्पन्न होती है जब सामाजिक दृष्टिकोण और कलंक यौन हिंसा को सामान्य बना देते हैं, उसे माफ कर देते हैं या नजरअंदाज करते हैं।

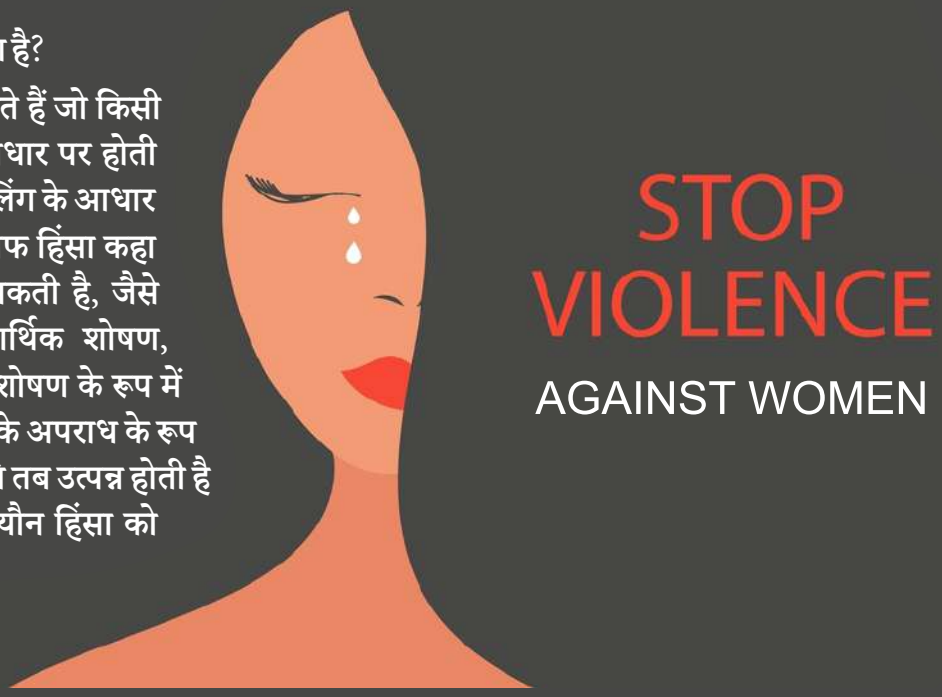

इस प्रकार, यह स्पष्ट होता है कि लैंगिक हिंसा और बलात्कार संस्कृति एक-दूसरे के पूरक हैं। देश में इन घटनाओं की बढ़ती संख्या समाज के लिए एक गंभीर चेतावनी है, जो यह बताती है कि यह समस्या गहरे सांस्कृतिक, सामाजिक और प्रणालीगत कारणों से फैली हुई है। इसे समझने के लिए मैं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और कुछ तथ्यात्मक आंकड़ों के माध्यम से इसे स्पष्ट करूंगा।

लैंगिक हिंसा की स्थिति: ऐतिहासिक सत्य या अतिरंजित कथा?

भारत, दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र, एक ऐसी संस्कृति के साथ जुड़ा हुआ है जिसमें लैंगिक हिंसा की जड़ें गहरी हैं, जो प्राचीन समय से चली आ रही हैं। आधुनिक साहित्यिक साक्ष्य से पता चलता है कि वैदिक काल के बाद महिलाओं की स्थिति में गिरावट आने लगी थी, जब दहेज और सती जैसी सामाजिक बुराइयां उत्पन्न हुईं, और महिलाओं की राजनीतिक और आर्थिक भागीदारी घटने लगी। यह स्थिति मध्यकाल में अपने चरम पर पहुंची, जब महिलाओं को शासकों द्वारा केवल सजावट के रूप में देखा जाता था। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति को भारत के पहले चुनाव आयुक्त सुकुमार सेन की रिपोर्टों से समझा जा सकता है। उन्होंने बताया कि स्वतंत्र भारत में 1951-52 के पहले चुनाव के दौरान महिलाएं अपने पुरुष परिवार के सदस्य के नाम से खुद को पंजीकृत करती थीं, जैसे "X की पत्नी" या "Y की मां," क्योंकि अपने नाम का खुलासा करना स्वीकार्य नहीं था। यह बताता है कि स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में महिलाएं आत्मविश्वाशहीन और परावलंबी थीं। दुख की बात है कि कई महिलाएं, जो औपचारिक शिक्षा और वित्तीय स्वतंत्रता से वंचित थीं, अपनी परिस्थितियों को अपनी किस्मत मानकर स्वीकार कर लेती थीं।

मेरी दादी मुझे बताती थीं कि महिलाएं यह मानती थीं कि उन्हें अपने पति के व्यवहार को स्वीकार करना चाहिए, भले ही वह उन्हें पीटें, क्योंकि इसे उनका "पत्नी धर्म" (पत्नी का कर्तव्य) माना जाता था। पुरुषों द्वारा महिलाओं की इस अधीनता को एक सामाजिक मानदंड के रूप में देखा जाता था और उस समय की महिलाएं इसे स्वीकार करती थीं। आज के शिक्षित समाज में, जहां महिलाएं भी शिक्षित हैं और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं, स्थिति बहुत बदली नहीं है—बल्कि यह और भी चिंताजनक हो गई है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के अनुसार, 2021 में भारत में 31,677 बलात्कार के मामले दर्ज किए गए, जो प्रति दिन लगभग 86 मामलों का औसत है। जबकि ये आंकड़े केवल रिपोर्ट किए गए मामलों का हिसाब देते हैं, वास्तविक आंकड़े कहीं अधिक हो सकते हैं क्योंकि कई पीड़ित, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों और वंचित समुदायों में, सामाजिक कलंक, प्रतिशोध या कानूनी प्रणाली में विश्वास की कमी के कारण महिलाएं शिकायत दर्ज नहीं कर पातीं।

हम समाज के रूप में कहां खड़े हैं?

मुझे दुख है कि, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM), राजनीति और अर्थशास्त्र जैसे क्षेत्रों में महिलाओं के सशक्तिकरण पर वर्तमान में जो व्यापक चर्चा हो रही है, वह अक्सर व्यवहार में खोखली प्रतीत होती है। संसद में महिलाओं के लिए आरक्षण (नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023) एक सकारात्मक कदम है, लेकिन यह लागू होने में 2029 तक का समय लगता है, जो हमारे राजनीतिक नेतृत्व में महिला सशक्तिकरण को लेकर तात्कालिकता के अभाव को दिखाता है। न्यायिक और कानूनी प्रणाली भी इस मामले में विफल हो रही है। 2013 का आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम, जिसने यौन हिंसा की परिभाषाएं विस्तारित की थीं और सजा बढ़ाई थी, अब भी अपराधियों को रोकने में प्रभावी नहीं दिखता। अन्य कानूनों जैसे POSH अधिनियम, 2013 और POCSO अधिनियम, 2012 में भी प्रणालीगत समस्याएं बनी हुई हैं। संयुक्त राष्ट्र महिला रिपोर्ट के अनुसार, भारत में बलात्कार के मामलों में से लगभग 88% पीड़ित महिलाएं पुलिस की निष्क्रियता, सामाजिक दबाव और लंबी न्यायिक प्रक्रियाओं के कारण न्याय तक नहीं पहुंच पातीं।

समाधान: समाज में नैतिक परिवर्तन की आवश्यकता

जॉन स्टुअर्ट मिल का हानि सिद्धांत बलात्कार संस्कृति और संबंधित हिंसा के नैतिक प्रभावों पर महत्वपूर्ण गहरा दृष्टिकोण प्रदान करता है। मिल ने कहा था कि किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करने का एकमात्र वैध कारण दूसरों को नुकसान पहुंचाने से उसे रोकना है । बलात्कार और यौन हिंसा सबसे गंभीर प्रकार के नुकसान होते हैं क्योंकि यह व्यक्ति की शारीरिक अखंडता का उल्लंघन करते हैं और स्थायी मानसिक आघात पहुंचाते हैं। एक ऐसा समाज जो बलात्कार और लैंगिक हिंसा को सहन करता है या उसकी गंभीरता को नजरअंदाज करता है, वह अपने सदस्यों पर सर्वांगीन नुकसान पहुंचाता है, सामाजिक विश्वास और नैतिक जिम्मेदारी को धीरे-धीरे नष्ट करता है।

इसलिए भारत में बलात्कार संस्कृति और लैंगिक हिंसा का समाधान प्राप्त करने के लिए, एक नैतिक परिवर्तन की आवश्यकता है, जो व्यक्तिगत और संस्थागत दोनों स्तरों पर हो। यह परिवर्तन एक ऐसी संस्कृति पर आधारित होना चाहिए, जो मानव गरिमा, स्वायत्तता और समानता का सम्मान करती हो। इसके लिए निम्नलिखित क्षेत्रों पर ध्यान देना आवश्यक है:

1. शिक्षा और जागरूकता: शिक्षा परिवर्तन की प्रक्रिया का नेतृत्व करना चाहिए। स्कूलों और विश्वविद्यालयों में सहमति, लिंग समानता और आपसी सम्मान सिखाए जाने चाहिए, हानिकारक पूर्वाग्रहों और ऐसी मानसिकताओं को चुनौती देते हुए जो हिंसा को बढ़ावा देती हैं।

2. सामुदायिक संवाद और भागीदारी: जमीनी स्तर पर आंदोलनों और स्थानीय NGOs को लिंग आधारित हिंसा, सहमति और पितृसत्ता पर संवाद शुरू करने का नेतृत्व करना चाहिए। ये संवाद बैठकें, जागरूकता अभियान और मोहल्ले की बातचीत के माध्यम से किए जा सकते हैं। स्थानीय नेताओं को शामिल करने से समानता और सम्मान पर चर्चाओं को सामान्य बनाया जा सकेगा।

3. कानूनी सुधार और जवाबदेही: 2013 का दंड विधेयक (संशोधन) जैसे कानूनों के बावजूद उनके प्रभावी प्रवर्तन में असमर्थता बनी हुई है। कानूनी तंत्र को मजबूत करना, त्वरित न्याय सुनिश्चित करना और पुलिस को यौन हिंसा को संवेदनशीलता से संभालने के लिए प्रशिक्षित करना जरूरी कदम हैं ताकि बलात्कार संस्कृति का उन्मूलन हो सके।

4. पितृसत्ता और लिंग भूमिकाओं की चुनौती: लिंग आधारित हिंसा से लड़ने के लिए मर्दानगी को फिर से परिभाषित करना और विषाक्त लिंग भूमिकाओं से दूर होना ज़रूरी है। महिलाओं का सशक्तिकरण समाज की प्रगति के केंद्र में होना चाहिए, इसे परंपरा के लिए खतरा नहीं समझा जाना चाहिए।

5. मीडिया और सार्वजनिक सोच का परिवर्तन: मीडिया संस्कृति को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे हानिकारक पूर्वाग्रहों को बढ़ावा देने के लिए जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए और इसके बजाय बदलाव और प्रगति की कहानियों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

6. पीड़ितों का समर्थन: पीड़ितों के लिए मानसिक, भावनात्मक और कानूनी सहायता का उपलब्ध होना बेहद ज़रूरी है। उन्हें हिंसा के बाद अकेले आघातों का सामना न करना पड़े, इसके लिए संपूर्ण समर्थन प्रणाली उपलब्ध होनी चाहिए ताकि उनकी स्थिति में सुधार हो सके।

7. पुरुषों को सहयोगी बनाना: पुरुषों को लिंग आधारित हिंसा से लड़ाई में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। जागरूकता अभियानों के ज़रिए उन्हें पूर्वाग्रहों को चुनौती देने, पीड़ितों का समर्थन करने और सहमति और सम्मान पर संवाद करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

बलात्कार संस्कृति और लिंग आधारित हिंसा भारतीय समाज में गहराई से समाई हुई हैं, लेकिन एक नैतिक बदलाव संभव

है। सम्मान, समानता और गरिमा पर आधारित संस्कृति को बढ़ावा देकर भारत उन सामाजिक ढांचों को कमजोर कर सकता है जो यौन हिंसा को बढ़ावा देते हैं। यह बदलाव समाज के सभी वर्गों—सरकार, नागरिक समाज, शिक्षण संस्थान और व्यक्तिगत प्रयासों—के सामूहिक प्रयास से ही संभव होगा। हमें हानिकारक सांस्कृतिक मानदंडों को चुनौती देनी होगी, कानूनों को प्रभावी ढंग से लागू करना होगा और ऐसा समाज बनाना होगा जहां सभी लोग, लिंग के आधार पर भेदभाव किए बिना, सुरक्षित और सम्मानपूर्वक जीवन बिता सकें।

एक समाज के रूप में भारत को एकजुट होना होगा ताकि मानवाधिकारों और गरिमा का सम्मान उसके भविष्य की नींव बने। तभी समाज की सच्ची लक्ष्मी, देवी लक्ष्मी के साथ, अमृत काल में देश को उसके सच्चे अर्थ में आशीर्वाद देगी।

रवि सैनी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भाषा आत्मा का रक्त है जिसमें विचार प्रवाहित होते हैं और जिससे वे विकसित होते हैं।"

ओलिवर वेंडेल होम्स

इडुक्की की सड़कों पर बाइक यात्राः एक अविस्मरणीय अनुभव

केरल की हरी-भरी वादियों, शांत झीलों और ऊंचे पहाड़ों के बीच बाइक चलाना ऐसा अनुभव है जिसे शब्दों में बयान करना मुश्किल है। इडुक्की , केरल के पहाड़ी जिले में स्थित ,इस तरह के अनुभव का आदर्श स्थान है। घुमावदार सड़कें, हरे-भरें चाय बागान और शांत प्राकृतिक सौंदर्य इस यात्रा को अविस्मरणीय बनाते हैं।

मेरी इडुक्की की बाइक यात्रा की शुरुआत कोच्ची से हुई। सुबह जल्दी मैनें अपनी बाइक की सवारी, एनएच-47 और एनएच-49 का अनुसरण करते हुए शुरु की। सड़क के दोनों ओर हरे-भरे चावल के खेत औऱ नारियल के पेड़ों की दृश्यता ने यात्रा को औऱ अधिक सुखद बना दिया। जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया , सड़के ऊंचाई हासिल करने लगीं और पहाड़ों की शानदार दृश्यता सामने आने लगी।

मुन्नार के बाद , मेरा अगला पड़ाव इडुक्की बांध था। यह विशाल बांध पेरियार नदी पर बना है औऱ एक शानदार दृश्य प्रस्तुत करता है। बांध के ऊपर से, मै नीचे की ओर बहती नदी और आसपास के हरे-भरे जंगलों का मनमोहक दृश्य देखा।

इडुक्की बांध के पास मैंने पेरियार वन्यजीव अभयारण्य की यात्रा की। यहाँ, मैंने जंगली हाथियों, बाघों और अन्य वन्यजीवों को देखने की कोशिश की, हालांकि दुर्भाग्य से, मैं सफल नहीं हो सका। फिर भी जंगल की शांति और सुंदरता का अनुभव करना अपने आप में एक उपहार था।

इस यात्रा के दौरान , मैंने कई चुनौतियों का सामना किया। सड़कें कहीं-कहीं काफी खराब स्थिति में थी और ट्रैफिक भी काफी था। इसके अलावा, पहाड़ी रास्तों पर बाइक चलाना थकाऊ था। हालांकि इन चुनौतियों के बावजूद यात्रा के अनुभव ने सब कुछ भुला दिया।

इस यात्रा ने मुझे प्रकृति की सुंदरता की सराहना करने और तनाव से दूर होने का मौका दिया। यह एक ऐसा अनुभव था जिसे मैं कभी नही भूलूंगा। यदि आप एक साहसी बाइकर हैं औऱ एक अविस्मरणीय यात्रा का अनुभव करना चाहते हैं , तो मैं दृढ़ता से इडुक्की की यात्रा करने की सलाह देता हूँ।

संतोष कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नौकरी के बाद घर पर पहली दिवाली

यूँ तो मेरे लिए दिवाली हमेशा से ही खुशियों का त्यौहार रहा है, पर इस बार की दिवाली मेरे और मेरे परिवार के लिए बहुत खास थी क्योंकि ये दिवाली मेरी नौकरी के बाद पहली दिवाली थी। घर वाले मेरा दिवाली पर घर आने का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। मेरे मन में भी इस बार घर जाने की अलग ही खुशी थी । मैनें कोच्ची से अपने घर वालों के लिए बहुत सारे उपहार खरीदे विशेषकर अपने भांजे के लिए जो अपने मामू के घर आने का इंतजार कर रहा था। कोच्ची से नई दिल्ली के लिए मेरी फ्लाइट 24 अक्टूबर की रात को थी। उस रात में दिल्ली में अपने प्रिय मित्र के यहाँ रुका जो कि मेरे लिए एक अलग अनुभव था । 25 अक्टूबर की सवेरे सवेरे ही मैं ट्रेन से अपने शहर रावतसर , जो कि दिल्ली से 350 किलोमीटर है, के लिए रवाना हो गया। रेलवे स्टेशन पर पापा और भाई का , लेने आना, मम्मी का राह देखना मेरे लिए एक भावुक पल था। उसी रात हम सब ने मिलकर घर को सजाया औऱ मेरी दीदी ने तो मेरे लिए उसी दिन से अलग-अलग पकवान बनाना शुरु कर दिया । दिवाली के दिन पूरे परिवार के साथ बाजार जाना, पटाखे लाने और खूब सारी शॉपिंग करना मेरे को यह पल बहुत रोमांचित कर रहे थे। दिवाली की शाम तो घर पर मूँग की दाल का हलवा बना और रात को पूरे परिवार के साथ पटाखे जलाए। अगले दिन सुबह सबके घर-घर जाकर मिलना औऱ सब के घर अलग-अलग मिठाईयाँ खाना औऱ जो मुझे इन सब से बहुत प्यार मिला वो मेरे लिए एक सपने से कम नहीं था। दिवाली के बाद दिन में पापा के काम में हाथ बटाना, शाम को दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलना और रात को भांजे(चिंकू) के साथ मस्ती करना, ये सब मुझे आनंद दे रही थी ,पर अपनी नौकरी पर वापस आने का समय भी पास आ गया था और मै 10 नवंबर को वापस अपनी नौकरी पर लौट आया।

वही आँगन,वही खिड़की,
वही दर याद आता है,
अकेला जब भी होता हूँ मुझे
घर याद आता है।

राकेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मोबाईल फोन से तीव्र आसक्ति

बीसवीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण खोजों में एक है मोबाईल फोन । अलेक्सांडर ग्राहम बेल के टेलिफोन से शुरू होकर हम आज स्मार्ट फोन तक पहुंच चुकें हैं और लगता है की सारी दुनिया ही हमारी हथेली में समा गई है । संदेश पहुंचाने की बुनियादी एहमियत के आगे मोबाईल फोन ने विविध तलों पर मानव जीवन को सुगम बनाया है, और जीवनस्तर को भी बेहतर बनाने में सहायक हुई है ।जो भी हो, इस सिक्के का एक अलग पहलू भी है । अन्य शब्दो में कहें तो हम सब मोबाईल फोन के स्क्रीन तक सिमट कर रह गए हैं । उस स्क्रीन से आंखें हटाकर पास वालों से मुस्कुराना हम भूल चुके हैं । अपने जज्बों, भावों को प्रकट करने के लिए चेहरे के बजाए इमोजियों पर हम भरोसा करने लगे हैं । सच तो यह है कि जब फोन तारों से बंधे हुए थे तब हम स्वतंत्र थे, जब से वे स्वतंत्र हो गए हैं तब से हम फोन से बंध गए हैं और उसके गुलाम हो गए हैं । इसीलिए आज समाज में विचार करने एवं चर्चा करने योग्य एक प्रमुख विषय मोबाईल फोन की ओर जनता के मन में उत्पन्न हो रही आसक्ति है । समाज में कई प्रकार की आसक्ति या लत के बारे में हम अवगत है । पर क्यों इस आसक्ति को हम इतना महत्वपूर्ण विषय मान रहे हैं और क्यो इसपर इतनी प्रमुखता से चर्चा कर रहे हैं ? यह इसलिए है कि अन्य प्रकार की आसक्तियां या लतें जैसे शराब, जुआ, सिगरेट इत्यादि के शिकार केवल कुछ लोग ही होते हैं परंतु मोबाइल फोन की जो लत है वह दुनिया भर में अत्यधिक मात्रा में लोगों को प्रभावित कर रही है ।

सरल शब्दों में मोबाईल फाने का अत्यधिक उपयोग और इसके उपयोग पर नियंत्रण पाने में असफलता को हम मोबाइल की ओर आसक्ति कहते हैं । फोन से दूर न रह पाना, पहले जिन गतिविधियों से हमें खुशी मिलती थी उनसे खुश न हो पाना, केवल मोबाईल से ही खुशी का एहसास होना, फोन पर बीताने वाले समय का अंदाज़ा न होना, नोटिफिकेशन आते ही उसे देखने के लिए उतावला होना, मोबाईल फोन न मिलने पर उद्वेग, कुंठा, व्याकुलता, हठ इत्यादि प्रकट करना, समाजिक संबंध कम हो जाना, नए कार्यों में ध्यान केंद्रित न कर पाना आदि मोबाईल की लत या आसक्ति के लक्षण हैं । यह बच्चों, युवाओं और बूढ़ों - सभी उम्र के लोगों की बीच देखा जा सकता है ।

मोबाईल फोन के लत के दुष्प्रभाव कई हैं- अकेलापन, एकाग्रता की कमी, रेडियेशन के कारण मस्तिष्क एवं शरीर एवं अन्य कोशों को होने वाली क्षति, वास्तविक जीवन और अपने आस-पडोस से दूर हो जाना इत्यादि। बडों से ज्यादा यह बच्चों को गंभीरता से प्रभावित कर रही है । उनकी बुद्धि के विकास एवं संवृद्धि के लिए यह घातक चुनौती है । बच्चों में अंतर्दृष्टि कम होती है, वे किसी चीज़ के बारे में जागरूक नहीं होते हैं । पर बडों को समझ की कमी नहीं है और इसके बावजूद वे इस आदत से निपटने में विफल हैं । अधिकांश लोग फोन के चुंगल से बचने के लिए संघर्ष तो कर रहे हैं, पर इसमें वे असफल हैं ।

इससे बाहर आने के लिए हमें अपने आप को नियंत्रण में रखना होगा - फोन के उपयोग के लिए समय सेट करना, स्वयं फोन फ्री जोन बनाना – जैसे डाइनिंग टेबल, बेडरूम आदि । बच्चों को माता-पिता को ही नियंत्रित करना होगा – फोन मैपिंग एप जैसी सुविधाओं का प्रयोग करके ।

सुबह जागकर मोबाईल उठाने के समय से रात के किसी पहर में अंजाने में हमारे हाथो से सरक कर गिर जाने वाला मोबाईल फोन धोखे से हमारी जिन्दगी के एक बडे हिस्से को ही हमसे छीन रहा है । इस बात के प्रति जागरूक होना ही इससे बचने का पहला कदम है ।

वीणा षाजी
अतिथि लेखक

जंगल में कुछ देर

कई बार जंगल देखा है । जंगल में सफारी की है, पर इस बार हमारी यात्रा थोडी अलग थी। केरल राज्य के द्वारा आयोजित 'नेचर वॉक' के बारे में बता रही हूँ, मैं । मैं अपने तीन दोस्तों के साथ पिछले साल जंगल का सफर करने चली । तीन घंटे का प्रोगाम था । हमने पहले से ही वेबसाईट पर बुक किया था ।

हम सुबह सात बजे ही पेरियार टाईगर रिसर्व में पहुँचे गए । हमारे अलावा ट्रेकिंग के लिए दो पंजाबी और एक गार्ड भी था । गार्ड ने हमें कई निर्देश दिए । 'नेचर वॉक' के बारे में बताया । आधे घंटे की तैयारी के बाद हमने यात्रा शुरू की । पहले पेरियार नदी पार करनी थी । इसके लिए बांस का बना एक राफ्ट था । लाईफ जैकेट पहनकर उसपर नदी पार की । उसमें बैठ नहीं सकते थे । खड़े ही रहना था । डर लग रहा था । ठंडी हवा बह रही थी। नदी के उस पार पहुँचे तो आवज़ें कम होने लगी । हमरे कदमों की आवज़ और कुछ चिडियों का चहचहाना, उतना ही था । हवा की सरसराहट हमें साफ़ सुनाई दे रही थी । बहुत शांत महसूस हो रहा था चारों ओर । रास्ते में कई तरह के पेड़-पौधे थे । गार्ड ने उन पेड़ों के नाम, उनकी विशेषताएं और उनसे संबंधित कहानियां आदि सुनाए । जंगल के पेड़ साधारण पेड़ों की तुलना में ऊंचे और बडे दिख रहे थे । हमारे आस-पास के पेड़, जिन्हें हम अक्सर देखा करते थे, वे भी जंगल में अलग ही दिख रहे थे । उनके पत्ते, फल, रूप सब देखकर पहचानना मुश्किल था । गार्ड ने हमारी सहायता की ।

अपने गार्ड के बारे मे मै बताना भूल गई । वे जंगल के आस-पास ही रहते थे । इसलिए उनको जंगल के बारे में बहुत जानकारी थी । उनको सरकार से ट्रेनिंग भी मिली हुई थी । उनके वर्णन बहुत मनोरंजक थे । वे सिर्फ किस्से ही नहीं सुनाते थे, उन्होंन हमें भी बातचीत में शामिल करने का प्रयास किया । उनके वर्णन तो सवालों से शुरू होते थे, गलत हो या सही हमें कुछ न कुछ तो जवाब देना पड़ता था और हमारे जवाब के आधार पर वे किस्से सुनाना शुरू

वीणा सुरेश
लेखापरीक्षक

करते थे ।

यात्रा के बीच गार्ड कुछ चौकन्ना हो गए क्योंकि उनको हाथी की मौदूजगी का एहसास हुआ था । कुचले हुए पौधों, हाथी के गंध, उथल-पुथल पडी मिट्टी ...यह सब हाथी के आस-पास होने के संकेत थे, जिससे उन्होंने हाथी की मौजूदगी का अंदाज़ा लगाया था । कुछ जांच के बाद गार्ड ने हाथी की उम्र तक का अंदाज़ा लगा लिया । उन्होंने हमें जागरूक होने का निर्देश दिया । हम चुपचाप गार्ड के पीछे-पीछे चलने लगे । आस-पास दिखने वाले संकेतों से गार्ड ने हमे बताया कि एक नहीं दो हाथी मौजूद हैं । उन्होंने हमें एक सुरक्षित स्थान दिखाकर वहां खडे होने का निदेश दिया और हाथियों के चले जाने के बाद हमने पुन: यात्रा शुरू की । रास्ते में छोटे –छोटे निर्झर थे और इन्हें पार करने के लिए लकड़ी से बने पुल थे । कुछ दूर और जंगल में चलने के बाद हमने वापिस चलना शुरू किया ।

रास्ते में हमें एक गंभीर आवाज़ सनाई दी । हमने चारों ओर नज़र चलाई पर इसके स्रोत को हम पहचान नहीं सके । जंगल की शांती को चीरकर यह आवाज़ बीच बीच में गूंजती रही । हमने गार्ड की ओर देखा तो उन्हें कोई आशंका नहीं हो रही थी क्योंकि उन्हें पता था कि यह क्या है और कहां से आवाज़ आ रही है । पत्तों के बीच हमने एक बडी चिड़िया को देखा । वह एक वेषाम्बल था, जिसे अंग्रेजी में ग्रेट हॉर्नबिल कहते है । यह केरल का राज्य पक्षी है । कई बार मैने इसके बारे में पढ़ा है, लेकिन पहली बार इसे देखने का अवसर मिला था । इस पक्षी की आवाज़ और आकार अन्य पक्षियों से बड़े होते हैं । हम कुछ देर इसे देखकर वहीं खडे रहे । फोटो खींचने की कोशिश की पर असफल रहे ।

कुछ दूर औरआगे बढ़कर हम फिर से अपने आगम स्थान-पेरियार के किनारे – पहुंच गए । वहां हमार बाँस का राफ्ट बंधा हुआ था । दोपहर हो गई थी और सूरज तप रहा था । नदि से बह रही ठंडी हवा ने उस तपन से हमें बचाया । कई अच्छी-अच्छी यादों से हमने अपनी जंगल सफारी को अंजाम दिया ।

आपने यदि कभी जंगल की सफारी न की हो तो अवश्य करें। इस व्यस्त दुनिया से अलग होकर कुछ पल के लिए प्रकृति का सौंदर्य और शांतता महसूस करके देखो, प्रकृति से आपको प्यार हो जाएगा ।

शिल्पराममम

पिछले साल मुझे हैदराबाद जाने का मौका मिला। हैदराबाद के आम पर्यटक आकर्षण सालारजंग संग्रहालय, हुसैन सागर झील, बिड़ला मंदिर, रामोजी फिल्म सिटी आदि हैं... लेकिन हैदराबाद के केंद्र में एक और जगह स्थित है.. इसे शिल्पराममम कहा जाता है। यह एक जीवंत कला और शिल्प गांव है जो आगंतुकों को एक समृद्ध सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करता है। यह अनोखा सांस्कृतिक परिसर भारत की विविध विरासत का जीवंत प्रमाण है, जो देश के पारंपरिक कला रूपों, हस्तशिल्प, संगीत, नृत्य और लोक संस्कृति को प्रदर्शित करता है।

यह गांव शिल्प प्रेमियों के लिए स्वर्ग है। आपको भारत के विभिन्न राज्यों से हाथ से बुने हुए वस्त्र, जटिल लकड़ी की नक्काशी, मिट्टी के बर्तन, धातु का काम और बहुत कुछ मिलेगा। प्रामाणिक स्मृति चिन्ह और हस्तशिल्प की खरीदारी के लिए यह एक आदर्श स्थान है।

शिल्परमम नियमित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मेजबानी करता है, जिसमें शास्त्रीय नृत्य प्रदर्शन, संगीत कार्यक्रम और लोक कला शो शामिल हैं, जिससे आगंतुकों को भारतीय प्रदर्शन कला की समृद्ध परंपराओं का अनुभव करने का मौका मिलता है।

पारंपरिक भारतीय गांव की नकल करने के लिए डिज़ाइन किया गया यह स्थान मिट्टी की झोपड़ियों, फूस की छत वाले मंडपों और खुले आंगनों से युक्त है। गाँव में घूमते हुए, आपको आधुनिक सुविधाओं से घिरे हुए ग्रामीण जीवन का एहसास होगा।

यदि आप शिल्पकला प्रक्रिया के बारे में अधिक जानने में रुचि रखते हैं, तो शिल्पराममम लाइव प्रदर्शन और कार्यशालाएं प्रदान करता है जहां कारीगर अपने कौशल का प्रदर्शन करते हैं। आगंतुक कुछ विशेष शिल्पों पर भी अपना हाथ आज़मा सकते हैं।

त्योहारों के समय यह स्थान विशेष रूप से जीवंत रहता है। वार्षिक शिल्पराममम शिल्प बाज़ार और अन्य स्थानीय त्यौहार स्टालों, प्रदर्शिनियों और उत्सव के माहौल के साथ भारत की कलात्मक परंपराओं की झलक पेश करते हैं।

चाहे आप भारतीय हस्तशिल्प के बारे में जानना चाहते हों, स्थानीय प्रदर्शनों में डूब जाना चाहते हों, या बस शांतिपूर्ण गाँव के माहौल का आनंद लेना चाहते हों, शिल्पराममम भारत की कलात्मक आत्मा की एक यादगार झलक पेश करता है।

अनिता अरविंद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक (CAG): नैतिकता और जिम्मेदारियाँ

भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (CAG) एक संवैधानिक प्राधिकरण है जो भारतीय सरकार में वित्तीय जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। केंद्रीय और राज्य सरकारों के खातों का लेखा परीक्षण करने वाली यह सर्वोच्च संस्था यह सुनिश्चित करती है कि सरकारी धन का उपयोग प्रभावी, पारदर्शी और निर्धारित उद्देश्यों के लिए किया जाए। इस जिम्मेदारी के निर्वहन के लिए उच्चतम स्तर की नैतिकता और ईमानदारी की आवश्यकता होती है। सीएजी और इसके कर्मचारियों द्वारा पालन की जाने वाली नैतिकता का ढांचा जनता के विश्वास को बनाए रखने, निष्पक्षता सुनिश्चित करने और लोकतांत्रिक जवाबदेही को बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सीएजी की भूमिका भारतीय संविधान के अनुच्छेद 148 में निहित है। इस कार्यालय को निष्पक्ष रूप से कार्य करने की स्वतंत्रता दी गई है, और इसके कार्य सरकारी या राजनीतिक दबाव से मुक्त होते हैं। यह स्वतंत्रता इसके नैतिक ढांचे का आधार है। सीएजी की जिम्मेदारी में सरकारी खर्चों का लेखा परीक्षण करना, विभागों के राजस्व और खर्च का मूल्यांकन करना, और संसद तथा राज्य विधानसभाओं को रिपोर्ट प्रस्तुत करना शामिल है।

इस स्तर की जिम्मेदारी को देखते हुए, सीएजी कार्यालय के कर्मचारियों को स्वतंत्रता, जवाबदेही, निष्पक्षता एवं वस्तुनिष्ठा, गोपनीयता जैसे सिद्धांतों का पालन करना चाहिए । स्वतंत्रता इसलिए कि बाहरी हस्तक्षेप, खासकर सरकारी या राजनीतिक निकायों द्वार हस्तक्षेप से बचा जा सके और निष्पक्ष एवं पक्षपात मुक्त लेखापरीक्षण सुनिश्चित किया जा सके । सीएजी के कार्यालय को संसद और जनता के प्रति जवाबदेह होना चाहिए ताकि सरकार के खर्चे में पारदर्शिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित की जा सके । लेखापरीक्षण व्यक्तिगत पूर्वाग्रह के बिना निष्पक्ष एवं तथ्यों एवं साक्ष्यों पर आधारित होनी चाहिए । उनपर संवेदनशील वित्तीय जानकारी की गोपनीयता बनाए रखने की भी जिम्मेदारी निक्षिप्त है चूंकि गोपनीयता का उल्लंघन होता है तो यह लेखा परीक्षण की साख को कमजोर कर सकता है।

सीएजी कार्यालय के कर्मचारियों के लिए विशेष आचार संहिता और नैतिक दिशा-निर्देश होते हैं, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि वे उच्चतम स्तर की पेशेवर नैतिकता का पालन करें। इन दिशानिर्देशों का उद्देश्य यह है कि लेखा परीक्षण प्रक्रिया पारदर्शी, निष्पक्ष और प्रभावी रहे:

ईमानदारी: सीएजी के कर्मचारी को अपने कार्यों में सर्वोच्च स्तर की ईमानदारी बनाए रखनी चाहिए। उन्हें किसी भी प्रकार के हितों के टकराव से बचना चाहिए, और उनके कार्यों से इस कार्यालय की प्रतिष्ठा को धक्का नहीं लगना चाहिए।

पेशेवरता: सीएजी के कर्मचारियों को लेखा परीक्षण, लेखांकन और वित्तीय प्रबंधन में विशेष ज्ञान और पेशेवर कौशल होना चाहिए। वे अपने कौशल का उपयोग नैतिक और जिम्मेदार तरीके से करें, और किसी भी प्रकार की लापरवाही या गलती से बचें।

निष्पक्षता और पारदर्शिता: सीएजी के कर्मचारी अपने परीक्षणों में पूरी पारदर्शिता बनाए रखें और सभी संबंधित पक्षों के साथ निष्पक्षता से पेश आएं। किसी भी विभाग या एजेंसी के साथ भेदभाव करना या पक्षपाती होना उचित नहीं है।

वस्तुनिष्ठता: सीएजी के कर्मचारी निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ रहें, ताकि उनके रिपोर्ट पूरी तरह से तथ्यों, साक्ष्यों और स्थापित मानकों पर आधारित हों। किसी भी व्यक्तिगत पूर्वाग्रह या बाहरी प्रभाव से बचना आवश्यक है।

कानूनों और मानकों का पालन: सीएजी के कर्मचारियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके लेखा परीक्षण सभी संबंधित कानूनों, नियमों और अंतर्राष्ट्रीय लेखा परीक्षण मानकों के अनुरूप हों। उन्हें अंतर्राष्ट्रीय सर्वोच्च लेखा संस्थाओं (INTOSAI) और अन्य राष्ट्रीय लेखा निकायों द्वारा निर्धारित सिद्धांतों का पालन करना चाहिए।

सीएजी के कार्यों में नैतिक मानकों का पालन करते हुए कई बार कुछ चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं ।

राजनीतिक दबाव एक ऐसी चुनौती है जो सीएजी के कार्य को प्रभावित कर सकती है क्योंकि सीएजी की रिपोर्ट कभी-कभी सरकार के राजनीतिक लक्ष्यों से टकराती है। ऐसे मे कार्यालय को जनता के प्रति अपने कर्तव्य पर डटकर रहना चाहिए और ऐसे राजनीतिक दबाव से बचना चाहिए और अपनी निष्पक्ष रिपोर्ट प्रस्तुत करनी चाहिए, भले ही वह सरकार के लिए अनुकूल न हो।

ब्यूरोक्रेसी का प्रभाव भी सीएजी के कार्यालय के कार्यनिष्पादन को प्रभावित कर सकती है । उदाहरणार्थ कभी-कभी, वरिष्ठ अधिकारी या मंत्रालय लेखा परीक्षणों को प्रभावित करने या उन्हें रोकने की कोशिश कर सकते हैं, खासकर जब वित्तीय गड़बड़ियाँ या भ्रष्टाचार सामने आते हैं। सीएजी को अपनी स्वतंत्रता बनाए रखनी चाहिए और किसी भी प्रकार के बाहरी दबाव के खिलाफ दृढ़ रहना चाहिए।

सरकारी क्षेत्र का भ्रष्टाचार भी सीएजी के कार्य निष्पादन में बाधा होकर सामने आती है । जब भ्रष्टाचार या वित्तीय गड़बड़ी की स्थिति होती है, तो लेखा परीक्षकों को सरकारी मशीनरी से प्रतिरोध का सामना करना पड़ सकता है। सीएजी के कर्मचारियों को साहस और दृढ़ता दिखानी चाहिए, ताकि वे भ्रष्टाचार का पर्दाफाश कर सकें, भले ही इसके गंभीर परिणाम हों।

हर सरकारी तंत्र की तरह ही संसाधनों की कमी का भी सामना सीएजी के कार्यालय को करना पडता है , जिसमें अपर्याप्त कर्मचारी या तकनीकी उपकरण शामिल हो सकते हैं। इन सीमाओं के बावजूद, कार्यालय को नैतिक मानकों का पालन करना चाहिए और प्रभावी लेखा परीक्षण सुनिश्चित करना चाहिए।

भारतीय लेखा और लेखा परीक्षा विभाग (IAAD), जो सीएजी के तहत कार्य करता है, एक आचार संहिता का पालन करता है, जो अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर आधारित होती है। इस आचार संहिता के कुछ प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

रिपोर्टिंग में ईमानदारी और पारदर्शिता: सीएजी के लेखा परीक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके निष्कर्षों पर व्यक्तिगत रुचियों, बाहरी दबावों या किसी अन्य पक्ष के प्रभाव का कोई असर न हो। रिपोर्टों में सच्चाई को प्रतिबिंबित करना चाहिए, भले ही वह सरकार के लिए असुविधाजनक हो।

गोपनीयता और विवेक: चूंकि लेखा परीक्षक अक्सर संवेदनशील और गोपनीय वित्तीय डेटा से निपटते हैं, इसलिए गोपनीयता बनाए रखना एक महत्वपूर्ण नैतिक आवश्यकता है। बिना अनुमति के जानकारी का खुलासा सार्वजनिक विश्वास को कमजोर कर सकता है।

निष्पक्षता और पेशेवर निर्णय: सीएजी के कर्मचारी अपने पेशेवर निर्णय निष्पक्ष और स्वतंत्र रूप से लें, और लेखा परीक्षणों में हितों के टकराव या पक्षपाती होने की स्थिति से बचें।

कानून का सम्मान: लेखा परीक्षक को देश के कानूनों का सम्मान करना चाहिए, और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके परीक्षण संविधानिक और कानूनी दिशानिर्देशों के अनुरूप हों।

अंततः, भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक और उसके कर्मचारियों का नैतिक आचरण भारतीय सरकार की पारदर्शिता, वित्तीय जवाबदेही और सार्वजनिक विश्वास को बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। लोकतांत्रिक प्रणाली में, जहां सरकार जनता के प्रति उत्तरदायी होती है, सीएजी की भूमिका सरकारी वित्तीय प्रबंधन में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने में अनिवार्य है। उच्चतम नैतिक मानकों और स्वतंत्र लेखा परीक्षण प्रक्रियाओं का पालन करके सीएजी सरकारी कार्यों में विश्वास बनाए रखता है और यह अच्छे शासन और राष्ट्रीय विकास में योगदान करता है।

संक्षेप में, सीएजी का नैतिक ढांचा न केवल सरकारी लेखा परीक्षणों की विश्वसनीयता को बढ़ाता है, बल्कि यह सरकार और जनता के बीच विश्वास को भी मजबूत करता है, जो एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए आवश्यक है।

सिमिषा सी एम
सहायक लेखापरीक्षाअधिकारी

एम एस अखिल के साथ वार्तालाप

सर्वप्रथम केरल क्रिकेट लीग -2024 - में सबसे महंगे खिलाड़ी के साथ समय बिताना एक रोमांचक अनुभव है। इस सुनहरे मौके पर हमें उनके विचार सीधे उनसे ही सुनने का अवसर मिल रहा है । आइए, हमारे अपने कार्यालय के एम एस अखिल से मिलते हैं, जो कि एक वरिष्ठ लेखापरीक्षक, एजी क्रिकेट टीम के ऑलराउंडर कप्तान और त्रिवेंद्रम रॉयल्स के लिए खेलने हेतु 7.4 लाख रुपये में नीलाम किए गए खिलाड़ी हैं।

प्रश्न: अखिल, आपको क्रिकेट से प्यार कैसे हुआ?

1990 के दशक के हर बच्चे की तरह, मेरे लिए भी क्रिकेट का पहला प्यार सचिन तेंदुलकर ही थे। "बूस्ट इज़ द सीक्रेट ऑफ माय एनर्जी" विज्ञापन में जब सचिन गोता लगाकर कैच लेते हैं, तो वह दृश्य मेरे दिल में बस गया। 2003 विश्व कप में प्लेयर ऑफ द सीरीज बनने से लेकर 2010 में पुरुषों के वनडे में पहला दोहरा शतक जड़ने तक, सचिन का हर लम्हा मेरे क्रिकेट प्रेम को गहराता गया। उनकी रिटायरमेंट स्पीच, उनका व्यक्तित्व और उनका चरित्र—सचिन की वजह से ही मुझे क्रिकेट से प्यार हुआ।

प्रश्न: आपने क्रिकेट खेलना कब शुरू किया? क्या बचपन से ही खेलते थे?

हम तृपूणितुरा के मैदानों और खेतों में खेलते थे, लेकिन पेशेवर क्रिकेट की कोई जानकारी नहीं थी। मैं अच्छा खेलता था और खेलना पसंद करता था, लेकिन यह नहीं पता था कि इसे करियर के रूप में अपनाया जा सकता है या इसके लिए आर्थिक रूप से कितना निवेश करना पड़ता है।

प्रश्न: पेशेवर क्रिकेट में आपकी शुरुआत कैसे हुई?

हमारे इलाके में हरी चेट्टन नाम के एक प्रमुख क्रिकेटर थे। 2006 में दसवीं की परीक्षा के बाद, मैं उनके घर गया और क्रिकेट के बारे में पूछताछ की। उन्होंने मुझे तृपूणितुरा क्रिकेट क्लब के समर लीग कैंप में आने को कहा। वही मेरे जीवन का टर्निंग पॉइंट था। मैंने वहां अच्छा प्रदर्शन किया, जिसके बाद मुझे रोजाना शाम की प्रैक्टिस के लिए बुलाया जाने लगा। फिर मैंने लिमिटेड ओवर टूर्नामेंट में खेलना शुरू किया और पहले केरल अंडर-17 क्रिकेट टीम के लिए चुना गया।

प्रश्न: केरल जूनियर टीम के लिए खेलना, उस उम्र में कैसा महसूस हुआ?

नई टीम में चुने जाने पर अक्सर टीम के बारे में जानकारी कम होती है । शुरुआत में कुछ समझ नहीं आता। यह पूरी तरह नया माहौल होता है। रोमांचक और थोड़ा डराने वाला भी। मैंने अंडर-17 में अच्छा प्रदर्शन किया और फिर केरल क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा कोतमंगलम में आयोजित एक कैंप के लिए चुना गया।

प्रश्न: इस कैंप ने आपके खेल और स्किल्स को कैसे बेहतर बनाया?

इस कैंप में भारत के लिए सभी फॉर्मेट में खेलने वाले एस श्रीशांत और केरल क्रिकेट टीम के कई वरिष्ठ खिलाड़ी मौजूद थे। मेरे लिए यह एक शानदार सीखने का अनुभव था। मेरी फील्डिंग अच्छी थी और मैं तेज गेंदबाजी करता था, लेकिन मेरा कद बहुत ज्यादा नहीं थी (जो एक तेज गेंदबाज के लिए फायदेमंद होती है), इसलिए मैंने स्पिन गेंदबाजी पर ध्यान दिया और अब मैं एक लेग स्पिनर हूं।

प्रश्न: आपके क्रिकेट करियर की आगे की यात्रा कैसी रही?

अंडर-17 क्लब क्रिकेट जिला मैचों में मैंने हर विभाग—बैटिंग, बॉलिंग और फील्डिंग—में अच्छा प्रदर्शन किया। इसके बाद, 2008 में केरल अंडर-19 टीम में चुना गया। फिर, अंडर-22 और अंडर-25 केरल टीमों में भी जगह मिली।

प्रश्न: क्रिकेट पर ध्यान देने के साथ-साथ पढ़ाई कैसी चली?

मैंने 2011 में सेंट पॉल्स कॉलेज, कलमश्शेरी से बीएससी फिजिक्स किया। फिर, महाराजास कॉलेज, एर्नाकुलम से पोस्टग्रेजुएशन पूरा किया।

इंटरव्यूअर की ओर से एक जानकारी:

इसी दौरान, कलमश्शेरी में पढ़ाई के दौरान अखिल की मुलाकात उनकी भविष्य की जीवनसंगिनी से हुई।

प्रश्न: अब हमारे ऑफिस की बात करें, यहां का अनुभव कैसा रहा?

2013 में, मैंने एजी ऑफिस की खेल कोटा भर्ती के बारे में पेपर में विज्ञापन देखा। मैंने आवेदन किया और चयनित हो गया। उसी साल, खेल कोटा में कई क्रिकेटर्स की भर्ती हुई और हमने पहली बार IA&AD टूर्नामेंट के ऑल-इंडिया सेमीफाइनल में जगह बनाई। फिर, 2024 में, हमने पहली बार IA&AD ऑल-इंडिया चैंपियनशिप जीती।

प्रश्न: अब हमें केरल क्रिकेट लीग में आपकी एंट्री के बारे में बताइए।

केरल क्रिकेट लीग, जो एक प्रीमियर फ्रेंचाइज़ी-आधारित टी 20 टूर्नामेंट है, 2024 में शुरू हुआ। यह छह टीमों का टूर्नामेंट त्रिवेंद्रम के ग्रीनफील्ड इंटरनेशनल स्टेडियम में हुआ। इस लीग के उद्घाटन सीजन में, मैं नीलामी में सबसे महंगा खिलाड़ी बना, जिससे मीडिया का खूब ध्यान आकर्षित हुआ।

इंटरव्यूअर की नजरों से अखिल

अपनी सफलता के बावजूद, अखिल बेहद सरल व्यक्ति हैं। क्रिकेट की चकाचौंध और ग्लैमर के बीच भी वे सहज और विनम्र बने हुए हैं। वे न केवल क्रिकेट में ऑलराउंडर हैं, बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी बहुमुखी प्रतिभा रखते हैं। वे अच्छे गायक हैं, बेहतरीन ताश, कैरम और बैडमिंटन खिलाड़ी हैं, और उनकी गुप्त प्रतिभा है—डंब शराड्स ! वे पूरी तरह प्रतिस्पर्धी हैं, लेकिन आत्म-जागरूक भी। उनकी यह खासियत है कि इतनी सारी प्रतिभाओं और सफलता के बावजूद उनके व्यक्तित्व में कोई अहंकार नहीं झलकता। वे युवाओं के भी चहेते हैं और वरिष्ठ अधिकारियों के भी। उनकी हमेशा मुस्कुराने वाली शख्सियत और हल्के-फुल्के मजाक करने की कला ने उन्हें एजी केरल क्रिकेट टीम का कप्तान बनाया। हम उन्हें भविष्य के लिए ढेरों शुभकामनाएं देते हैं!

मीरा लाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक नीड बनाया था

एक नीड बनाया था, तिनकों को संजोकर
जिसमें पाला-पोसा था, चोंच में दाना डालकर,
सिखाया उडना, सिखाया दाना चुगना,
और एक दिन निकल गए वे पंख पसारकर,
स्वतंत्रता का ऐलान करके
खुश तो होना चाहिए कि हो गया है जीवन अर्थपूर्ण,
जो करने चले हम वह हो गया है संपूर्ण,
पर न जाने क्यूं एक सूनेपन का एहसास,
बस गया था दिल में यकायक ,
लगता था, छोड गए है हमें किनारे,
और निकल पडे वे नैया में पैर पसारे,
आज जब देखती हूँ उन्हें,तो लगता है,
वही तिनके वे भी बटोर रहे हैं,नीड़ बनाने की बेचैनी में।
वही उत्साह, वही आशा, वही उमंग, वही छटपटाहट,
अब यह जीवन चक्र लगता है परिपूर्ण ,
कल मेरी बारी थी , अब उनकी बारी है ।

सिन्धु नायर
हिन्दी अधिकारी

हिंदी का महत्व

हम हिंद के निवासी हैं, हिंदुस्तान हमारी पहचान है और हिंदी हमारी प्रमुख भाषा। फ्रांस, जर्मनी, चीन, आदि देशों में अनेक क्षेत्रीय भाषाएं हैं किंतु सब की अपनी-अपनी राष्ट्रभाषा है। राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। भारत में भी भाषाओं की बहुलता है और सभी भाषाओं का अपना-अपना महत्व है, लेकिन जनसंपर्क उसी भाषा में संभव होता है जो ज्यादा से ज्यादा प्रचलित हो। भारत जैसे विकासशील देश में विकास को गति देने के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाना अनिवार्य हो जाता है। देश के बड़े भूभाग में बोले जाने के कारण वो सहजता हिंदी से ही संभव है।

जिस देश की भाषा जितनी व्यापक तथा सुदृढ़ है, वह आर्थिक,सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टि से उतना ही विकसित है। हमारे देश में हिंदी एकता, अखंडता की कड़ी है। यह किसी विशेष क्षेत्र की भाषा न होकर विभिन्न समुदायों के बीच विनिमय का माध्यम है।

हिंदी के प्रसिद्ध लेखक भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने हिंदी के परिप्रेक्ष्य में कहा है कि,

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल

इस का अर्थ है कि जीवित रहने के लिए रोटी, कपड़ा, मकान के अलावा चौथी जरुरत हिंदी होनी चाहिए।

वर्तमान में देश में संवैधानिक मान्यता प्राप्त भाषाओं की संख्या २२ है, किंतु हिंदी इन सब भाषाओं के बीच समन्वय बनाने का सशक्त माध्यम है। इसी कारण संविधान निर्माताओं ने १४ सितम्बर १९४९ को हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया। भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य बनता है कि वो राष्ट्र के लिए राष्ट्र ध्वज औऱ राष्ट्र गान की तरह हिंदी का भी सम्मान करें और उसकी गरिमा को बनाए रखें। इसी में हमारा सम्मान निहित है।

देश के संविधान में हिंदी को अचानक राजभाषा का स्थान प्राप्त नहीं हुआ है। इसके पीछे कारण एक गरिमापूर्ण इतिहास रहा है। गाँधी जी ने कहा था कि हिंदी भाषा में वह है जो राष्ट्रीय एकता को बांधकर रख सकती है। इसके स्वरुप में ऐसी क्षमता है कि वो समस्त भारतीय भाषाओं की क्षेत्रीय गरिमा में निखार लाने के साथ-साथ देश की अखंडता को बनाए रख सकती है।

हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति की धरोहर है जिसे बचाना भारतवासियों का कर्तव्य होना चाहिए। आज वैश्वीकरण तथा बाजारवाद के दौर में हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपयोग बढ़ा है। हिंदी भाषा की प्रगति के लिए यह एक सार्थक प्रयास है।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह ने हिंदी को एक सशक्त और सम्मानजनक भाषा के रूप में पहचाना। उन्होंने कहा, "हिंदी ने भारतीय राजनीति, समाज और संस्कृति में अनगिनत बदलाव लाए हैं। यह हमारी पहचान को मजबूत करती है।"

रामधारी सिंह दिनकर, हिंदी के एक महान कवि और लेखक थे, जिन्होंने हिंदी को एक सशक्त और जागरूक भाषा के

रूप में पहचाना। उन्होंने कहा था, "हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें न केवल प्रेम, समाज और संस्कृति का अहसास होता है, बल्कि यह संघर्ष, स्वतंत्रता और समानता की भावना भी व्यक्त करती है।"

रवींद्रनाथ ठाकुर ने हिंदी साहित्य में न केवल काव्य की शास्त्रीयता बल्कि उसकी समाजिक भूमिका को भी पहचाना। उन्होंने कहा था, "हिंदी में विविधता है, यह कई बोलियों से जुड़ी है और यह भारतीय संस्कृति के विविध पहलुओं को व्यक्त करती है।"

भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने हिंदी को एक सशक्त और प्रभावी माध्यम के रूप में पहचाना था। उन्होंने कहा था, "हिंदी वह भाषा है, जो भारत के सभी हिस्सों में एकता बनाए रखने का कार्य कर सकती है।"उनका मानना था कि हिंदी के माध्यम से पूरे देश के नागरिकों को जोड़ना संभव है, और यह भाषा हर भारतीय नागरिक के बीच संवाद और समझ का पुल बन सकती है।

"जो राष्ट्रभाषा हिंदी है, वही राष्ट्र की शान है।
हिंदी की इस महिमा को, समझो भाई यह पहचान है।"

धर्मेंद्र सिंह
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गर्व का अनुभव नहीं है, वह देश उन्नत नहीं हो सकता

राजेन्द्र प्रसाद

जम्मू और कश्मीर की सुंदरता की खोज

जम्मू और कश्मीर, जिसे "पृथ्वी पर स्वर्ग" कहा जाता है, मेरी हाल की यात्रा के दौरान अपनी प्रसिद्धि पर खरा उतरा । यहां की शांत झीलों से लेकर शानदार पहाड़ों तक, इस क्षेत्र ने प्राकृतिक सौंदर्य और शांति का एक आदर्श मिश्रण पेश किया।

हमारी यात्रा श्रीनगर से शुरू हुई, जहां डल झील पर शिकारा सवारी करना एक जादुई अनुभव था। दूर-दूर तक बर्फ से ढंके पहाड़ और खूबसूरत मुग़ल बागों ने ऐसा महसूस कराया जैसे हम किसी स्वप्न में हैं।

इसके बाद, हम गुलमार्ग गए, जहां बर्फ से ढकी हुई दृश्यावली ने मेरी सांसें रोक दीं। अफ़रवत शिखर तक का गोंडोला सफर अद्भुत था और बर्फ में स्कीइंग करना एक अविस्मरणीय साहसिक अनुभव था।

पाहलगाम एक शांतिपूर्ण जगह थी, जो हरे-भरे परिदृश्यों और लिद्दर नदी से घिरी हुई थी। बेताब घाटी, अपनी अप्रतिम सुंदरता के साथ, एक मुख्य आकर्षण थी, और मामलेश्वर मंदिर ने हमारी यात्रा में आध्यात्मिकता का स्पर्श जोड़ा।

हमारा आखिरी पड़ाव सोनमर्ग था, जो स्वर्ग से कम नहीं था। सुनहरे घास के मैदान और शानदार थाजिवास ग्लेशियर ने गुजरते समय से अछूता स्वर्ग बना दिया।

इस यात्रा को और भी खास बना दिया कश्मीरी संस्कृति का अनुभव ने । स्वादिष्ट वज़वान भोजन से लेकर यहां के लोगों की गर्मजोशी और आतिथ्य तक, हर पल अविस्मरणीय था।

जम्मू और कश्मीर एक ऐसा स्थान है जो स्थायी यादें छोड़ जाता है—इसकी सुंदरता, संस्कृति और शांति हमेशा मेरे साथ रहेगी।

अमृता कृष्णन यू एस
लेखापरीक्षक

मेरे मस्से पर तीन बाल

एक समय था जब मुझे अपने चेहरे पर मस्से से उगने वाले तीन छोटे बालों से नफरत थी। वे जिद्दी थे, हमेशा अजीब कोणों पर उगते रहते थे और कभी-कभी अनपेक्षित पलों में ध्यान आकर्षित कर लेते थे। अपनी युवावस्था में, मैं खास तौर पर इनके बारे में बहुत संकोची थी। मैं इन्हें मेकअप या बालों से ढकने की कोशिश करती, चाहती थी कि ये बस गायब हो जाएं। मुझे लगता था कि ये छोटी सी कमी मेरी त्वचा की चिकनाई और इसी तरह, मेरी आत्मविश्वास को बिगाड़ देती है।

कई सालों तक, मैं अपनी छवि से जूझती रही, और इन तीन बालों को लेकर निराश होती रही। जब भी मैं शीशे में अपनी शक्ल देखती, ये तीन बाल किसी छोटे सिपाहियों की तरह बाहर निकले हुए लगते थे, जैसे कि वे आपस में भिडने के लिए तैयार हों ।

लेकिन जैसे-जैसे मैं बड़ी हुई, कुछ बदला। दुनिया भी अब अलग नजर आने लगी। मुझे समझ में आया कि ये तीन बाल छुपाने की चीज नहीं थे—वे मेरे होने का एक हिस्सा थे। मुझे याद आया कि मैंने दूसरों को उनके अजीब-स्पेशल गुणों के साथ खुश होते देखा था—जैसे झाइयां, दाग-धब्बे, या जन्म के निशान। मुझे महसूस हुआ: शायद मेरे ये तीन बालों में भी कोई दोष नहीं था। शायद ये मेरी अलग पहचान का हिस्सा थे, जो यह याद दिलाते थे कि मैं किसी पैटर्न में फिट होने के लिए नहीं, बल्कि अपनी विशिष्टता को अपनाने के लिए बनी हूं।

मैंने उन्हें एक नए दृष्टिकोण से देखना शुरू किया। अब मुझे वे दोष नहीं, बल्कि विशेषता लगे। वे मेरी पहचान का एक छोटा, मगर महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए। अब मैं इन्हें छुपाती नहीं, बल्कि इन्हें जैसा हैं वैसे रहने देती हूं। वे मेरे उस साहस का प्रतीक बन गए, जो मुझे अपनी असाधारणता को अपनाने और मनाने की शक्ति देता है।

अब जब मैं शीशे में अपनी शक्ल देखती हूं, तो मैं उन तीन बालों को देखकर मुस्कुराती हूं। अब वे कोई दोष नहीं, बल्कि मेरी कहानी का हिस्सा हैं—एक ऐसी कहानी जो केवल मेरी है। जो कभी मुझे असुरक्षित महसूस कराती थी, अब वही मुझे गर्व से भर देती है। ये तीन बाल अब मुझे यह याद दिलाते हैं कि असल सुंदरता हमारे वास्तविक होने में है।

मेरे मस्से पर ये तीन बाल ? अब मैं इन्हें प्यार करती हूं, क्योंकि ये मुझे मेरी अनोखी पहचान देते हैं।

सिजी सी वर्गीस
सहायक पर्यवेक्षक

शांति की धारा

"ओ मेरे लाल, धीरे चलो, चुपचाप चलो

सिर झुकाकर चलो, सीधे चलो

पत्थरों के मध्य से चलो

गोलियों की वर्षा न छेदे तुमारे सिर

ना बनो तुम एक शहीद

हमारे बारे में ना सोचता कोई

जीवित रहे या मरे सही

हमारी पहाड़ी हमारी धरती

पर शब्द कहने का हक नही

आ गई है युद्ध की अंतिम धारा

ना रंगे हम उसे हमारे रक्त के द्वारा

क्योंकि हमने उसे बहुत प्यार से संवारा"

ताराकांत पांडा
लेखापरीक्षक

ऑडिट सप्ताह 2024

महालेखाकारों के कार्यालय, शाखा कोच्ची एवं प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, शाखा कोच्ची में लेखापरीक्षा सप्ताह 18 से 21 नवंबर 2024 तक मनाया गया । इस अवसर पर शाखा कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए एक मिनट वार्ता , डम्ब शराड्स और रंगोली जैसी प्रतियोगिताएं और कर्मचारियों के बच्चों के लिए चित्रकारी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इसके अलावा महालेखाकारों के कार्यालय, तिरुवनंतपुरम के समन्वय से कोच्ची में 'लेखापरीक्षा दिवस 2024' के उपलक्ष में 14 नवंबर 2024 को कॉलेज के छात्रों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता "QRIOUS 2.0" का आयोजज भी किया गया । इस प्रतियोगिता में केरल के विभन्नि क्षेत्रों के कॉलेज छात्रों ने भाग लिया ।

बच्चों की चित्रकारी / रंगोली प्रतियोगिता के कुछ दृश्य

क्यूरियस 2.0/ QRIOUS 2.0

हिन्दी पखवाड़ा 2024-25 - रिपोर्ट

महा निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय,चेन्नै, शाखा कार्यालय-कोच्ची द्वारा भारत सरकार, गृह मंत्रालय के निदेशों एवं अनुदेशों का पालन करते हुए दिनांक 14.09.2024 से 27.09.2024 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया जिसका आरंभ हमारे कार्यालय में इस वर्ष दिनांक 14.09.2024 को नई दिल्ली में अखिल भारतीय तौर पर आयोजित हुए उद्घाटन समारोह के उपरान्त किया गया ।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान कार्यालय के कर्मचारियों के लिए कुल 05 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिनमें से 04 एकल प्रतियोगिताएं तथा 01 समूह प्रतियोगिताएं शामिल थीं । एकल प्रतियोगिताओं में वर्णानुक्रम ,श्रुत लेखन, निबंध लेखन प्रतियोगिता, टिप्पण आलेखन व अनुवाद प्रतियोगता एवं क्विज प्रतियोगिता(टीम प्रतियोगिता) शामिल थी । कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में बड़े ही उत्साह के साथ और बढ़-चढ़कर भाग लिया । हिन्दी पखवाड़े का समापन 27 सितंबर 2024 को उप निदेशक(डीटी)II की अध्यक्षता तथा मुख्य अतिथि डॉ. मेरी जीना, सहायक प्राद्यापक, एसएच कॉलेज, तेवरा व सभी अनुभागों के पदधारियों की उपस्थिति में सम्मेलन कक्ष में किया गया ।

इस वर्ष हिंदी पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण-पत्र दिए गए । साथ ही भारत सरकार, गृह मंत्रालय की प्रोत्साहन योजना के अधीन हिन्दी में उत्तम कार्य करने के लिए प्रथम ,द्वितीय पुरस्कार एवं तृतीय पुरस्कार हेतु चयनित विजेताओं को प्रमाण-पत्र दिए गए । इस वर्ष की चल वैजयंती के विजेता आईटीआरए अनुभाग को भी पखवाड़े के समापन समारोह में पुरस्कृत किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा 2024

एक नया अध्याय: पिता बनने की मेरी यात्रा

पिता बनना ऐसा एहसास था जिसे मैं सही तरीके से बयां नहीं कर सकता। यह एक नई दुनिया में कदम रखने जैसा है—एक ऐसी दुनिया जो अद्भुतता, आश्चर्य और एक भारी जिम्मेदारी से भरी हुई है। मुझे वह दिन याद है जब मेरी बेटी का जन्म हुआ था। जब मैंने उसे पहली बार अपनी बाहों में पकड़ा, तो सब कुछ बदल गया। समय जैसे रुक गया, और उस एक पल में पूरी कायनात सही महसूस हुई।

पिता बनने से पहले, मैंने अक्सर सोचा था कि यह कैसा होगा। मैंने बिना नींद की रातें, अंतहीन डायपर बदलना और जिम्मेदारी के भारी बोझ के बारे में कल्पना की थी। लेकिन मेरे दिल में जो खुशी और प्यार का सैलाब आया, मै उसके लिए कतई तैयार नहीं था। मैं हैरान होकर देख रहा था, जब मेरी बेटी एक छोटी सी हंसी और हरकत के साथ दुनिया को परख रही थी।

इस अनुभव को और भी सुंदर बनाने वाली बात यह थी कि इसे मैं अपनी पत्नी के साथ साझा कर रहा था। उसे एक माँ के रूप में देखना—वह कितनी स्वाभाविक, पोषक और मजबूत है—मुझे अत्यधिक प्रशंसा से भर देता है। हम साथ में पालन-पोषण की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, पहली बार दूध पिलाने से लेकर पहले शब्द के बोलने तक हर पल हंसी, थकावट और कोमलता से भरे हैं। लेकिन इन सब के बीच, हमने एक ऐसा संबंध बनाया है जो अडिग है।

हमारे दिन अब एक मिश्रण हैं—शांत सुबहें, जब हम सोते हुए गले मिलते हैं, और रोमांचक दोपहरें, जब छोटे-छोटे कदमों की आवाज़ चारों ओर गूंजती है। एक पिता के रूप में, मैंने यह सीखा है कि पितृत्व केवल जीवन की आवश्यकताएं उपलब्ध करने के बारे में नहीं है; यह उपस्थित रहने, धैर्य रखने और उन छोटे-छोटे पलों को संजोने के बारे में है जो बहुत जल्दी गुजर जाते हैं। अपनी बेटी का हर पड़ाव- पहली बार जब उसने मेरा हाथ पकड़ा या पहली बार जब उसने "पापा" कहा, एक जीत जैसा महसूस होता है – कुछ ऐसा जो मनाने के योग्य है, जो हमेशा याद रखने के योग्य है।

पिता बनने में एक ऐसी संतुष्टि है जिसे मैंने पहले कभी महसूस नहीं किया था। मेरी बेटी की हंसी इस दुनिया की सबसे मधुर ध्वनि है, और उसे हर दिन बढ़ते और सीखते हुए देखना एक चमत्कार है। सबसे ज़्यादा, यह परिवार में प्यार और खुशी का एहसास दिलाता है।

मैंने यह महसूस किया है कि पितृत्व केवल दुनिया में किसी का मार्गदर्शन करने के बारे में नहीं है, बल्कि उनसे सीखने के बारे में भी है। मेरी बेटी मुझे धैर्य, विनम्रता और जीवन को आश्चर्य के साथ गले लगाने का महत्व सिखाती है। हर दिन एक नया साहसिक कार्य है, और मैं हर एक पल का इंतजार करता हूं।

पिता बनने ने मुझे उन तरीकों से बदला है, जिनकी मैंने कभी कल्पना नहीं की थी। मैंने सीखा है कि प्यार को हमेशा शब्दों के द्वारा व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं होती। कभी-कभी यह शांति के पलों, साथ साथ मुस्कुराने, और उन छोटे हाथों में है जो हमेशा आपके दिल को समाए रखते हैं। हर दिन, मुझे यह याद दिलाया जाता है कि मैं कितना भाग्यशाली हूं कि इस यात्रा को अपनी पत्नी और बेटी के साथ साझा कर रहा हूं। साथ में, हम एक ऐसी सुंदर कहानी बना रहे हैं, जिसे मैं अपनी पूरी ज़िंदगी भर संजोकर रखूंगा।

बेनिडिक्ट सेनो
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

"भाषा कोई आनुवंशिक उपहार नहीं है, यह एक सामाजिक उपहार है।
एक नई भाषा सीखना क्लब का
सदस्य बनना है - उस भाषा को बोलने वालों का समुदाय।"

फ्रैंक स्मिथ

उपहार

उपहार या उपहार एक ऐसी वस्तु है जो किसी को (जो पहले से मालिक नहीं है) भुगतान या बदले में कुछ भी अपेक्षा किए बिना दी जाती है। हालाँकि उपहार देने में पारस्परिकता की अपेक्षा शामिल हो सकती है, उपहार का उद्देश्य मुफ़्त होता है।

उपहार भावनाओं को व्यक्त करने में शक्तिशाली उपकरण हैं - वे प्रशंसा के मूर्त प्रतीक के रूप में काम कर सकते हैं और सार्थक रिश्ते बनाए रखने में हमारी मदद करने में प्रभावशाली हैं।

हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक उपहार महत्व रखता है और खुशी लाता है।

विचारशील उपहार चुनने के लिए युक्तियाँ

प्राप्तकर्ता के लिए खरीदारी करें, अपने लिए नहीं। ...

यह केवल आपके द्वारा चुनी गई वस्तु के बारे में नहीं है - अपने दृष्टिकोण के बारे में सोचें। ...

बढ़िया पैकेजिंग ढूंढें - उपहार देते समय आप एक छाप छोड़ना चाहते हैं। ...

अपने उपहार देने की योजना पहले से बनाएं। ...

अपने उपहार के साथ अद्वितीय बनें। ...

आनंददायक दावतें दें।

उत्तम उपहार ढूँढने के सरल उपाय

आपका बजट क्या है?

इस व्यक्ति की रुचि किसमें है?

अपने उपहार को वैयक्तिकृत करें।

उपहार को ही एक इवेंट बनाएं.

इसका स्वाद अच्छा बनाएं.

भावनाएँ भी एक उपहार हैं क्योंकि वे हमें कुछ बताने के लिए मौजूद हैं। वे हमारे जीवन के उन हिस्सों की ओर इशारा करते हैं जिन पर ध्यान देने की ज़रूरत है। ये भावनात्मक उपहार हमें जो गलत है उसे ठीक करने और जीवन में पूर्णता पाने में मदद कर सकते हैं - अगर हम जानते हैं कि कैसे सुनना है।

देना जीवन का सर्वोत्तम उपहार है - और इसे करने के लिए आपको धन या विशेष कौशल की आवश्यकता नहीं है। दूसरों को देने का सबसे अच्छा तरीका पूरी तरह से उपस्थित रहना है। अपने बारे में, अपना समय और ध्यान गहराई से देने के लिए। उपस्थिति का उपहार, हर पल को पूरी तरह से अनुभव करने का उपहार भी है

शोभा बी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कोच्ची टॉलिक द्वारा महा निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, चेन्नै, शाखा कोच्ची को उत्तम राजभाषा कार्यनिष्पादन के लिए पंचम पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय)

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

वर्ष 2022-23 के लिए प्रशस्ति पत्र

महा निदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, चेन्नै, शाखा कोच्ची
श्रेणी - केन्द्र सरकारी कार्यालय (10। से अधिक कार्मिक)
को उत्तम राजभाषा कार्य के लिए कोच्ची टॉलिक की ओर से यह

प्रशस्ति पत्र (पंचम)

सहर्ष प्रदान किया जाता है।

विशेष उपलब्धि - उत्तम राजभाषा कार्य

प्रीति गर्ग
अध्यक्ष
कोच्ची न रा का स (कार्या.)

कोच्ची
दि. 23.10.2024

24.10.2024 को कोच्ची टॉलिक द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में भाग लेकर श्री के शशिधर, उप निदेशक ने ट्रोफी एवं श्रीमती सिंधु नायर, हिन्दी अधिकारी ने प्रमाणपत्र ग्रहण किया ।

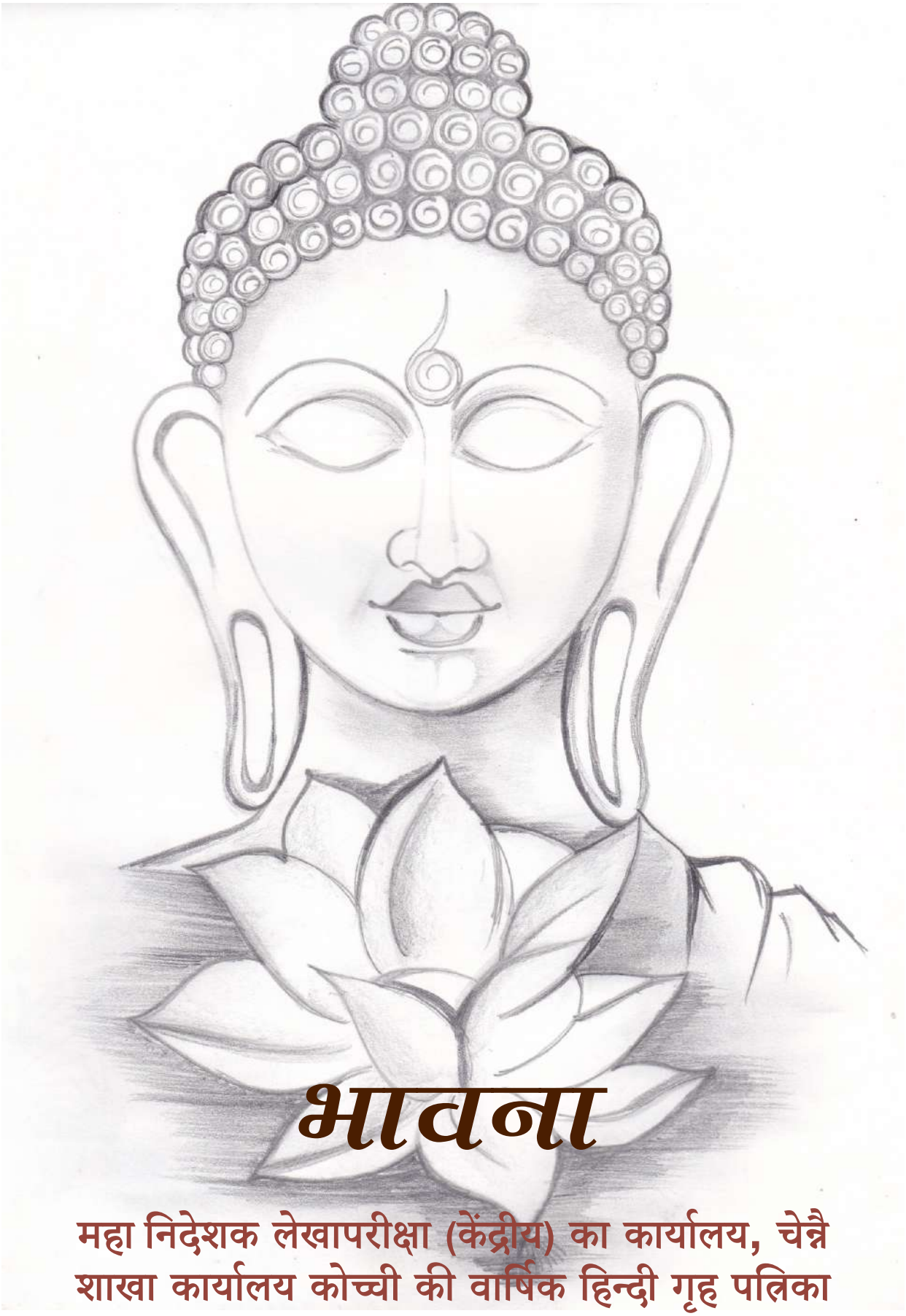

भावना

महा निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, चेन्नै
शाखा कार्यालय कोच्ची की वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका